IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 4, Issue 3, December 2024
Impact Factor: 7.53

vuqlwfpr tutkfr;ksa ds fodkl esa O;kikfjd Ñf"k Qlyksa dk v/;;u

¼e/;izns'k ds e.Myk ftys dh e.Myk rglhy ds fo'ks"k lUnHkZ esa½

डॉ. हर्ष देव चौधरी
सहायक आचार्य (भूगोल विभाग)
माधव विश्वविद्यालय, पिंडवाड़ा,
सिरोही (राजस्थान)

पूजा ठाकरे
पी-एच.डी. (भूगोल)
माधव विश्वविद्यालय, पिंडवाड़ा,
सिरोही (राजस्थान)

डॉ. देवेंद्र मुझाल्दा
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
माधव विश्वविद्यालय, पिंडवाड़ा

'kks/k lkj:
पुण्य सलिला नर्मदा नदी के किनारे अपने गौरवशाली अतीत के साथ स्थित, प्राचीन धार्मिक नगर माहिष्मती जो अब मण्डला के नाम से जाना जाता है। यह जबलपुर संभाग का प्राकृतिक संसाधनों वन तथा खनिज पदार्थो की दृष्टि से सबसे समृद्ध जिला है। इसकी एक गौरवशाली ऐतिहासिक सभ्यता और संस्कृति है। इसका परिचय कुछ इस प्रकार है मण्डला जिले की ऐतिहासिक आदिवासी सभ्यता और संस्कृति महाकौशल का दक्षिण–पूर्वी क्षेत्र जिसमें मण्डला, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा, शहडोल, सरगुजा कवर्धा तथा बिलासपुर जिले के भाग सम्मिलित है, जो आदिवासी बहुल क्षेत्र है। मण्डला इसका प्रमुख केन्द्र है। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ों की सभ्यता तो आज केवल इतिहास के कुछ पन्नों में सीमित है, परन्तु उनके अवशेष आज भी नर्मदा घाटी की सभ्यता में समाहित इन जातियों में देखने को मिलता है। सर्वप्रथम स्व. श्री रामभरोस अग्रवाल ने इस जातियों के बीच में रहकर इनकी सभ्यता और संस्कृति का गहन अध्ययन कर सभी पुरानी मान्यताओं को निष्क्रिय करते हुए उनकी श्रेष्ठता प्रतिपादित की। रानी दुर्गावती का युग यहाँ का स्वर्णिम युग कहा जाता है। यहाँ के किसान सोने की मुद्राओं में राजकोष का कर चुकाया करते थे। समृद्धि यहाँ की चेरी थी। साहित्य तथा संस्कृति की जो उन्नति इस काल में हुई वह अवर्णनीय है।

'kCn dqath: –अनुसूचित जनजातियों के विकास में व्यापारिक कृषि फसलों का अध्ययन करना।